|  |  |
| --- | --- |
| **(क)** | क्‍या भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा किए गए मुद्रास्‍फीति-रोधी उपाय अपना वांछित प्रभाव उत्‍पन्‍न करने में विफल रहे हैं; |
| **(ख)** | यदि नहीं, तो इनसे मुद्रास्‍फीति को नियंत्रित करने में कितनी सफलता मिली है; |
| **(ग)** | अधिक विकास के लिए उच्‍च मुद्रास्‍फीति का भविष्‍य में क्‍या प्रभाव पड़ेगा; और |
| **(घ)** | इसका यदि कोई हानिकारक प्रभाव पड़ेगा तो उसका मुकाबला किस प्रकार किया जाएगा? |

**उत्‍तर**

**वित्‍त मंत्री (श्री प्रणब मुखर्जी)**

**(क) से (घ):** विवरण सभा-पटल पर रख दिया गया है।

**भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा किए गए मुद्रास्‍फीति रोधी उपायों के बारे में श्री परिमल नथवानी**

**द्वारा पूछे गए 22 नवम्‍बर, 2011 को उत्‍तरार्थ राज्‍य सभा तारांकित प्रश्‍न सं. 15**

**के उत्‍तर में उल्‍लिखित विवरण।**

**(क) और (ख):** मौद्रिक नीति संबंधी उपायों ने मुद्रास्‍फीति पर काबू पाने और स्‍फीतिकारी संभावनाओं पर रोक लगाने में मदद की है, हालांकि ये दोनों ही उच्‍च स्‍तर पर कायम हैं। तथापि, मौद्रिक प्रबंधन का कार्य खाद्य मुद्रास्‍फीति के स्‍वरूप, अनिश्‍चित वैश्‍विक माहौल और वैश्‍विक वस्‍तुओं की कीमतों में हुई वृद्धि के कारण मुश्‍किल हो गया था।

**(ग) और (घ):** उच्‍च मुद्रास्‍फीति और नकदी प्रवाह को नियंत्रित करने के कुछ प्रयासों के कारण भी अल्‍पावधिक परिप्रेक्ष्‍य में विकास पर हानिकारक प्रभाव पड़ा है। पहली प्राथमिकता मुद्रास्‍फीति पर काबू पाना है ताकि विकास की दीर्घावधिक संभावनाओं पर असर न पड़े।

**\*\*\*\*\***